ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान
बिसवाँ सीतापुर

-- कल्कि - अवतरण --

"जीव "का कल्कि रूप में अवतरित होना

माया के संसार मे, सब पार ब्रम्ह का खेल!
मन से सब है चल रहा, पुरुष, प्रकृति का मेल।।

[1] हर युग में अवतार हुए है :-

सतयुग - नरसिंह- खम्भा से - देहरीपर
त्रेता - राम- अवध - असुरो का विनाश
द्वापर - कृष्ण- मथुरा - दुष्टो का विनाश
कलयुग- कल्कि- मन (कालाघोडा) -"जीव"के मोक्ष, मुक्ति और जीवन के कल्याण के लिए

[2] मन मथुरा, तन द्वारिका काया काशी जान।
दस द्वारे का देहरा , तामे जीव पिछान।।

[3] मन पर जीव को सवार होना है:-

(i) ज्ञान की तलवार है।
(ii) काला घोडा मन है।

मन के मते न चालिए, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार हैं, कोटिन में है एक।।

[4] मन को ही काल कहते है। काल को ही समय कहते है।
काल और माया की चक्की में सब पिस रहे है।

[5] जीव-माया को जीतकर, मन के घोडे पर सवार होकर, इसे अवतार लेना है।

[6] कलयुग में केवल कल्कि अवतार से ही जीव के सभी काम और जीवन के सभी काम पूरे होगें। दूसरा कोई उपाय नहीं है।

[7] **समय और मनुष्य मे बलवान कौन है:-**

मनुष्य नहीं बलवान है, समय होत बलवान।
भीलन लूटी गोपियां, वही अर्जुन, वही बाण॥

[8] **जब मनुष्य बलवान है ही नहीं तो इस मन या समय को कैसे जीतेगा:-**

मानुष तुम सब हो नही, मानुष तेरी देह।
घट के पर्दे यदि खुलें, सन्मुख होय बिदेह।।

[9] **घट में पर्दे किस प्रकार के है:-**

माया रूपी तत्व के, घट में पट है अनेक।
जीव इन्हीं में कैद है, मार्ग है केवल एक।।

वायु, प्रकाश, और नाद के, घट में पट हैं अनेक।
यह सब पट कैसे खुलें, सबका भेद है एक।।

[10] **जीव पटो को क्यों नही खोल पा रहा है:-**

(i) वेद शास्त्र बहु कियो उपाई।
छूटि न ग्रंथि और उरझाई।।

(ii) जीव प्रयास जो भी करे, और फंसे यह जीव।

बिना प्रयास के पट खुले, यह नहि जानत जीव।।

[11] **अन्दर के पटो की गाँठे क्यों नही खुल रही है:-**

(i) जड़, चेतनहि ग्रंथि पड़ि गई।
जदपि मृषा, छूटति कठिनई।।

(ii) छोरन ग्रंथि जानि जो कोई।
तब यह जीव कृतारथ होई।।

(iii) जड माया की गांठ सव, चेतन है यह जीव।
चेतन को यदि खोजले, तुरत मुक्त हो जीव।।

(12) **क्यों गांठ खोलें, क्यों पट खोले,"जीव" को मुक्त होने से लाभ क्या है :-**

(i) कलयुग (इसी शरीर) में कल्कि अवतार इसी जीव का होना है।
काले मन पर असवार हो, खडग ज्ञान की धार।
जीव का ही अवतरण हो, कल्कि नाम अवतार॥

[13] **अवतार कैसे होगा :-**

(i) दृष्टि निम्न है जीव की,उच्च दृष्टि हो जीव।
बंधन सव तुरंते कटे ,सहजदृष्टि हो जीव।।

(ii) सन्मुख और अनन्य हो,करे न कोई प्रयास।
सन्मुख, सहज की दृष्टि हो,पहुंचे आतम पास।।

(iii) संचालन हो आत्म से,मन थिर तुरत ही होय।
खड्ग ज्ञान की धारकर,जीव अवतरित होय ॥

14. कल्कि अवतार की मुख्य विशेषताएँ:-

(I) यह अवतार जीव का कायाकल्प होकर समय के अनंत आयामों पर शासन करने वाला है !

(II) यह पूर्ण अवतार है !

(III) इस अवतार के बाद में कभी भी कोई अवतार नहीं होगा !

(IV) यह अन्तिम अवतार है !

(V) अवतार होते ही हमारा जीव आत्मा बन जायेगा और हमारे में सतयुग हो जायेगा अतः

" हम बदलेंगे, युग बदलेगा "

(VI) कलयुग का अर्थ है शरीर और सतयुग का अर्थ है आत्मा !

अतः हमारे शरीर में ही आत्मा प्रकट हो जायेगी और " कलयुग में ही सतयुग आ जायेगा !"

बाबा जी का यह नारा पूरा हो जायेगा !

15. " कल्कि-अवतरण "

मन की दृष्टि हो सन्मुख आत्म के,
मति की गति भी सुमति ह्वै जावै!.
मन की गति विदेह की होकर,
जीव बदल आतम बनि जावै!!
काला मन भी सफ़ेद तुरत हो,
आयाम अनंत पार ह्वै जावै!!
जीव सवारी करै इस मन पर,
कल्कि अवतरण का नाम धरावै!!

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान

मोचकला बिसवाँ (सीतापुर)

मो. - 9984257903